DR.BRR GOVERNMENT DEGREE COLLEGE,
डॉ.बूर्गुला रामकृष्ण राव शासकीय स्नातक महाविद्यालय,
JADCHERLA,जड्चेर्ला
MAHABUBNAGAR DIST, TELANGANA
जिला: महबूब नगर, तेलंगाना राज्य

Department of Hindi /हिन्दी –विभाग

Student Study Projecton

"Ram Bhakti Kavya Ki Visheshatayein "

छात्र अध्ययन परियोजना कार्य

"राम भक्ति काव्य की विशेषताएँ"

प्रस्तुति ¨ Submitted by

S.No.	Roll.No.	Name of The Student	Class
1	20033006441 025	K.Raghavendra	B.Sc MPC 2 year
2	20033006441028	K.Naveen	B.Sc MPC 2 year
3	20033006441035	Md.Saleemoddin	B.Sc MPC 2 year
4	20033006441046	P.Praveen Kumar	B.Sc MPC 2 year
5	20033006441051	S.Santosh	B.Sc MPC 2 year

पर्यवेक्षक / Supervisor

डॉ.नरसिंह राव कल्याणी एम.ए.,एम.फिल.,पीएच.डी. /

Dr.NarsmhaRaoKalyani M.A.,M.Phil.,Ph.D.

सहायक आचार्य, ¨ **AsstiProfessor**

हिन्दी-विभाग/ **Dept.ofHind**

DR.BRR GOVT. DEGREE COLLEGE, JADCHERLA

Certificate

This is to certify that the Present Project work entitled **"Ram Bhakti Kavya Ki Visheshatayein "** is the Bonafide work of 1.K.Raghavendra 2.K.Naveen 3.Md.Saleemoddin 4.P.Praveen Kumar 5.S.Santosh under the Supervision of Dr.K.Narsimha Rao . Asst.Prof of Hindi. Dr.BRR.Govt.Degree College, Jadcherla. No part of this work has been submitted to any other University for the award of any Degree.

Date : 12/02/2022

Dr.K.Narsimha Rao
Dept of Hindi

HEAD
Department of Hindi
Dr. BRR. Govt. Degree College
JADCHERLA-509 301
Dist. Mahabubnagar (T.S.)

Principal
DR.BRR GOVT. DEGREE COLLEGE,
JADCHERLA

Principal
Dr. BRR Government Degree College
Jadcherla, Dist.Mahabubnagar

DECLARATION

We hereby declare that the investigation results incorporated in the present Study Project entitled **"Ram Bhakti Kavya Ki Visheshatayein "** were originally carried out by us under the Supervision of Dr.K.Narsimha Rao . Asst.Prof of Hindi. Dr.BRR.Govt.Degree College, Jadcherla. No part of this work has been submitted to any other University for the award of any Degree.

S.No.	Roll.No.	Name of The Student	Class	Signature
1	20033006441025	K.Raghavendra	B.Sc MPC 2 year	
2	20033006441028	K.Naveen	B.Sc MPC 2 year	K. Naveen
3	20033006441035	Md.Saleemoddin	B.Sc MPC 2 year	
4	20033006441046	P.Praveen Kumar	B.Sc MPC 2 year	Praveen
5	20033006441051	S.Santosh	B.Sc MPC 2 year	

Date : 12 / 02 / 2022

Acknowledgement

We are thankful to our principal Dr. Appiya Chinnamma , who stands as an inspiration behind doing this student study-project work. We owe our gratitude for her concern and necessary feedback on the prepared study projects.

We are also thankful to our Supervisor Dr. Narasimha Rao Kalyani Assistant Professor, Hindi Department, who extended his full cooperation in doing this student-project work meaningfully. His unparalleled suggestions and informative inputs have contributed a lot in presenting this project work in a beautiful and systematic manner. We express our gratitude to him.

Finally, we extend our heartfelt thanks to our Teashers, friends and all Dr. Burgula Ramakrishna Rao Government Degree College, Jadcherla family, whose best wishes are always with us.

∫∫∫∫∫∫∫∫

धन्यवाद ज्ञापन

इस छात्र अध्ययन – परियोजना कार्य को करने की प्रेरणास्रोत एवं प्रोत्साहन देने वाली आदरणीय प्राचार्या **डॉ.अप्पीय चिन्नम्मा जी** के प्रति हम श्रद्धा पूर्वक नमन करते हैं, जिनके अतुलनीय वात्सल्यपूर्ण शब्द परियोजना - कार्य करने के प्रति ऊर्जा का काम करती रही हैं। आपके आशीर्वाद एवं कृपा हम पर सदा के लिए बरसते रहें यही प्रार्थना है।

इस छात्र – परियोजना कार्य करने में सम्पूर्ण सहयोग देने वाले श्रद्धेय गुरुजी **डॉ . नरसिंह राव कल्याणी जी** सहायक आचार्य , हिन्दी विभाग,को धन्यवाद प्रकट करना मात्र एक औपचारिकता है। आपके सुझाव एवं सूचनाएँ इस परियोजना कार्य को सुंदर एवं व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने में बहुत-बहुत योगदान दिये हैं। आपके प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं।

और अंत में अपने अध्यापकों ,मित्रों एवं समस्त **डॉ.बूर्गुला रामकृष्ण राव शासकीय स्नातक महाविद्यालय, जड्चेर्ला** परिवार के प्रति हम हृदय गहनतल से धन्यवाद अर्पित करते हैं, जिनकी शुभकामनायें सदा हमारे साथ हैं।

∫∫∫∫∫∫∫

Abstract

“Ram Bhakti Kavya Ki Visheshatayein ”

:

Ramakavya has greatly influenced the Indian public. It has presented the sublime form of Bhakti to the public. Ramakavya entertains the masses. Ram is Maryada

Purushottam, his character is ideal for mankind. The origin of the Ramakavya stream can be accepted from Swami Ramananda of the Vaishnava sect. Although the basis of Ramakavya is Ram-kavya and drama available in Sanskrit literature.

The following characteristics are visible from the observation of this poetic stream:- Form of Rama. Prestige of dignity, Devotion of Dasya Bhava, Establishment of ideal, Coordination spirit of Lokmangal: Prestige of ideal.

Overall, Ram Bhakti poetry has made Indian literature immortal. ,

अनुक्रमणिका

*** Hindi Students Study Project – Synopsis ¨रूपरेखा**

रामभक्ति शाखा की विशेषताएँ

Ài प्रस्तावना

Ãi रामभक्ति शाखा की विशेषताएँ

2.1. राम का स्वरूप

2.Ãü मर्यादा की प्रतिष्ठा

2.3.भक्ति का स्वरूप

2.4.आदर्श की स्थापना

2.5.लोकमंगल की भावना :

2.6.समन्वय भावना

2.7.काव्यरूपों की विविधता

2ü“ü काव्य शैलियाँ :

3ü राम भक्त कवि तुलसी दास का परिचय :

4.निष्कर्ष

रूपरेखा

Hindi Students Study Project – Synopsis

1. Title:शीर्षक:राम भक्ति काव्य की विशेषताएँ (“Ram Bhakti Kavya Ki Visheshatayein ”)

2. Statement of the Problem or Hypothesis/ समस्या या परिकल्पना का विवरण:

राम भक्ति काव्य की विशेषताएँ ” इस परियोजना कार्य का विषय है। इसके अंतर्गत राम भक्ति शाखा की विशेषताएँ का अध्ययन किया जाएगा। इसके आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा कि भारतीय साहित्य में विशेषतः मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में राम भक्ति शाखा की विशेषता क्या है। यह भी देखने का प्रयास किया जाएगा कि राम

भक्ति शाखा की भक्ति पद्धति से सामाजिक एकता को किस प्रकार सुद्दढ़ करने का प्रयास किया है।

3.Aims and Objectivesलक्ष्य&उद्देश्यû इस परियोजना कार्य के लक्ष्य एवं उद्देश्य निम्न प्रकार से हैं

1.सगुण भक्ति पद्धति कि विशेषता को उजागर करना है।

2.हिन्दी भक्ति साहित्य में राम भक्ति शाखा के महत्व को जानना है।

3.राम भक्ति भावना कि विशेषताओं को उजागर करना है।

4.गोस्वामी तुलसी दास का जीवन परिचय से अवगत होना है।

4. Review of Literature साहित्य की समीक्षाû

हिन्दी साहित्य में राम भक्ति शाखा के साहित्य पर बहुत सारे शोध और परियोजना कार्य सम्पन्न हुए हैं । विशेषतः राम भक्ति-भावना पर तथा समन्वय भावना पर कई अध्ययन हुए हैं। इन अध्ययनों में भक्ति का स्वरूप तथा सामाजिक विकास के बारे में राम भक्त कवियों के विचारों को उल्लेख किया गया है।इस परियोजना कार्य में विशेष रूप से राम सभक्ति-भावना कि विशेषताओं का अध्ययन किया गया है।

5. Research Methodologyशोध क्रियाविधिः-

शोध के कई पर्यायवाची शब्द हें। जैसे –अनुसंधान, अन्वेषण, गवेषण,खोज आदि। साधरणतः साहित्य में शोध और अनुसंधान शब्द ही प्रचलित हैं। किसी विषय का उसके विभिन्न पक्षोंकों तथ्यों ,तत्वों, आधारों, तर्क शीलता आदि कसौटियों पर परखना ही शोध कहलाता है। शोध के कई प्रकार हैं। जैसे – सर्वेक्षण पद्धति , आलोचनात्मक पद्धति ,समाजशास्त्रीय पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति, समस्यात्मक पद्धति आदि। हमने इस परियोजना कार्य के लिए समाजशास्त्रीय शोध विधि को अपनाते हुये कबीर दास के साहित्य में भक्ति भावना कि विशेषताओं को उजागर करने का प्रयास किया है।

6. Analysis of Data.डेटा का विश्लेषणः-

राम भक्ति साहित्य में उल्लेखित भक्ति संबंधी साहित्य का अध्ययन करेने केलिए हमने विशेष रूपसे द्वितीय वर्ष स्नातक के पाठ्यक्रम में निर्धारित हिन्दी साहित्य का इतिहास को आधार बनाया है।इसमें रामाश्रयी शाखा में उल्लेखित प्रत्येक अंश से संबन्धित विषयों को तथा तुलसी दास से संबन्धित अनेक ग्रन्थों में खोजा है। इसकेलिए हमने **जडचेरला** में स्थित

शाखा-ग्रंथालय,**महबूब नगर** में स्थित जिला ग्रंथालय आदि में जाकर परियोजना सामाग्री को संग्रहीत किया है। इस सामग्री को व्यवस्थित ढंग से निर्धारित परियोजना कार्य के अनुसार उपयोग किया गया है।

7.Findigsजाँच - परिणाम:-

इस परियोजना-कार्य का यह परिणाम निकाला है कि राम भक्ति भावना भारतीय समाज को एकता में पिरोने में सफल रही है। विशेष रूप से समाज में समन्वय स्थापित करने के लिए तुलसी दास द्वारा रचित श्री रामचरित मानस ग्रंथ विशेष सहयोग दिया है। कुल मिलकर राम भक्ति शाखा भारतीय साहित्य तथा समाज को सुदृढ़ किया है।

8. Conclusion and Suggestionनिष्कर्ष और सुझाव : रामभक्ति शाखा अपने साहित्य से भारतीय समाज को एकता में बांधने में सफल रही है। समाज के विभिन्न वर्गों को एकत्रित करने में यह शाखा सफल रही है। भगवान की भक्ति करने का सरल उपाय समाज के लोगों को देने का प्रयास किया है। इस प्रकार रामभक्ति भावना समाज के सभी लोगों को परमात्मा के प्रति आस्था जगाने में मदद की।

∫∫∫∫∫∫∫∫∫∫∫

“Ram Bhakti Kavya Ki Visheshatayein ”

रामभक्ति शाखा की विशेषताएँ

Àiप्रस्तावना : रामकाव्य ने भारतीय जनता को बहुत प्रभावित किया है। इसने भक्ति के उदात रूप को जनता के सन्मुख उपस्थित किया है। रामकाव्य जनता का मनोरंजन करता है। आधुनिक काल में जो रामलीलाएँ होती है, उनसे आबाल वृद्ध, ग्रामीण एवं नागरिक सभी का मनोरंजन होता है और इस मनोरंजन के द्वारा मानसिक उन्नयन भी। राम मर्यादा पुरुषोत्तम है, उनका चरित्र मानव जाति के लिए आदर्श है।

2ïरामभक्ति शाखा की विशेषताएँ :

रामकाव्य धारा का प्रवर्तन वैष्णव संप्रदाय के स्वामी रामानंद से स्वीकार किया जा सकता है । यद्यपि रामकाव्य का आधार संस्कृत साहित्य में उपलब्ध राम-काव्य और नाटक रहें हैं । इस काव्य धारा के अवलोकन से इसकी निम्न विशेषताएँ दिखाई पड़ती हैं :-**2.Àïराम का स्वरूप** : रामानुजाचार्य की शिष्य परम्परा में श्री रामानंद के अनुयायी सभी रामभक्त कवि विष्णु के अवतार दशरथ-पुत्र राम के उपासक हैं । अवतारवाद में विश्वास है । उनके राम परब्रह्म स्वरूप हैं । उनमें शील, शक्ति और सौंदर्य का समन्वय है । सौंदर्य में वे त्रिभुवन को लजावन हारे हैं । शक्ति से वे दुष्टों का दमन और भक्तों की रक्षा करते हैं तथा गुणों से संसार को आचार की शिक्षा देते हैं । वे मर्यादापुरुषोत्तम और लोकरक्षक हैं ।

2ïÃïमर्यादा की प्रतिष्ठा :

रामकाव्य में मर्यादा का प्रमुख स्थान है। राम का चरित्र ही मर्यादा पुरुषोत्तम का चरित्र है। चरित्र में पूर्णत: मर्यादित किये बिना कोई भी व्यक्ति पुरुषोत्तम नहीं बन सकता है। राम काव्य में मर्यादा कई रूपों में दिखलाई पड़ती है। जीवन के विभिन्न कार्य व्यापारो में मर्यादा को मूल्य के रूप में स्थापित किया गया है। धर्मनीति व्यक्ति के चरित्र को मर्यादित करती है, राम का चरित्र आद्यन्त धर्ममय है, इसलिए मर्यादा उसके चरित्र में सर्वत्र दिखलाई पड़ती है। मितभाषी होना, सत्य पर –ढ़ रहना, पिता की आज्ञा का पालन करना, प्रतिज्ञा पूरी करना आदि गुण मर्यादा के ही अंग हैं। इसी तरह रामकाव्य के अनेक चरित्र मर्यादा से मुक्त है। तुलसीदास जी ने श्रृंगार को भी मर्यादित कर दिया है। उनसे पूर्व कृष्णकाव्य की रचना हो चुकी थी, उसका प्रभाव रामकाव्य पर अवश्य पड़ा। तुलसीदास जी की ‘गीतावली’ में राम के हिंडोला.विहार और फाग.क्रीड़ा का उल्लेख है। अग्रदास और नाभादास जी के अष्टयानों में श्रृंगार की मात्रा अधिक है। मुनिलाल के ‘रामप्रकाश’ में राम.कथा का वर्णन रीति.पद्धति के अनुसार है। रीतिकाल में जो रामकाव्य रचा गया उसकी मुंगारिता अश्लीलता की सीमा तक जा पहुँची। परन्तु तुलसी ने कहीं भी श्रृंगार को मर्यादा की सीमा से नीचे नहीं गिरने दिया।

2iÕi भक्ति का स्वरूप : दास्य भाव की भक्ति

कृष्णकाव्य में सख्य भक्ति की प्रधानता है, किन्तु रामकाव्य में दास्य. भक्ति प्रधान है। वैसे उसमें नवधा भक्ति के सभी प्रकार श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्म निवेदन मिल जाते हैं। इसमें राम की उपासना सेव्य सेवक भाव से की गयी है। तुलसी दास दास्य भाव से राम की आराधना करते हैं । वे स्वयं को क्षुद्रातिक्षुद्र तथा भगवान को महान बतलाते हैं । तुलसीदास ने लिखा है : **सेवक-सेव्य भाव बिन भव न तरिय उरगारि ।** राम-काव्य में ज्ञान, कर्म और भक्ति की पृथक-पृथक महत्ता स्पष्ट करते हुए भक्ति को उत्कृष्ट बताया गया है । तुलसी दास ने भक्ति और ज्ञान में अभेद माना है : **भगतहिं ज्ञानहिं नहिं कुछ भेदा** । यद्यपि वे ज्ञान को कठिन मार्ग तथा भक्ति को सरल और सहज मार्ग स्वीकार करते हैं । इसके अतिरिक्त तुलसी की भक्ति का रूप वैधी रहा है ,वह वेदशास्त्र की मर्यादा के अनुकूल है ।

2iOi आदर्श की स्थापना :

रामकाव्य में विभिन्न आदशोर्ं की कल्पना की गई है और उनकी स्थापना पर बल दिया गया है। आदर्श चरित्र की कल्पना से आदर्श समाज की कल्पना का स्वरूप रामकाव्य में साकार सामने आता है। आदर्श भाई, पुत्र, मित्र, राजा आदि तो यहाँ है ही, आदर्श परिवार और आदर्श समाज का चित्र भी विद्यमान है। राम का राज्य आदर्श राज्य है। वही आदर्श राज्य रामराज्य कहलाता है। राम काव्य में चित्रित विभिन लोकादर्श हमेशा प्रेरणादायक रह े हैं। इन आदर्शों के कारण ही राम काव्य की ऊँचाई को दूसरे काव्य प्राप्त न कर सकें।

2.5.लोकमंगल की भावना :

प्रभाव की दृष्टि से राम काव्य की गणना उच्चकोटि के उन काव्यों में होगी जिनका उद्देश्य जन.कल्याण या लोकमंगल होता है। ये काव्य सिर्फ मनोरंजन के लिए न लिखे जाकर गम्भीर कल्याणकारी उद्देश्य को लेकर रचे गये हैं। हिन्दी साहित्य में राम काव्य के प्रवर्तक

तुलसी यद्यपि यह कहते हैं कि उन्होंने 'रामचरितमानस' की रचना स्वान्त:सुखाय की, किन्तु वस्तुस्थिति यह है कि उतनी ही लोकहिताय भी हो गई। अर्थात् उसका उद्देश्य जन कल्याण या लोक.मंगल को उबुद्ध करना हो गया। राम काव्य के नायक का उद्देश्य भी लोकमंगल ही है। उसका उद्देश्य इन काव्यों को उद्देश्य भी बन गया। रामभक्ति साहित्य में राम के लोक-रक्षक रूप की स्थापना हुई है । तुलसी के राम मर्यादापुरुषोत्तम तथा आदर्शों के संस्थापक हैं । इस काव्य धारा में आदर्श पात्रों की सर्जना हुई है । राम आदर्श पुत्र और आदर्श राजा हैं, सीता आदर्श पत्नी हैं तो भरत और लक्ष्मण आदर्श भाई हैं । कौशल्या आदर्श माता है, हनुमान आदर्श सेवक हैं । इस प्रकार रामचरितमानस में तुलसी ने आदर्श गृहस्थ, आदर्श समाज और आदर्श राज्य की कल्पना की है । **आदर्श की प्रतिष्ठा** से ही तुलसी लोकनायक कवि बन गए हैं और उनका काव्य लोकमंगल की भावना से ओतप्रोत है ।

2.6üसमन्वय भावना : तुलसी का मानस समन्वय की विराट चेष्टा है । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में - उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है । लोक और शास्त्र का समन्वय, गार्हस्थ्य और वैराग्य का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, भाषा और संस्कृत का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय, पांडित्य और अपांडित्य का समन्वय रामचरितमानस में शुरु से आखिर तक समन्वय का काव्य है । हम कह सकते हैं कि तुलसी आदि रामभक्त कवियों ने समाज, भक्ति और साहित्य सभी क्षेत्रों में समन्वयवाद का प्रचार किया है ।

रामकाव्य में समन्वय.भावना भी परिलक्षित है। यद्यपि गोस्वामी जी रामभक्त थे, किन्तु उन्होंने शिव, पार्वती गणेश आदि अन्य देवताओं की भी स्तुतियों की है। उन्होंने शिव.पूजन को पर्याप्त महत्त्व प्रदान किया। उनके राम ने रामेश्वरम् में शिवलिंग की स्थापना की, सीता ने भी गौरी पूजन किया है। तुलसी ने राम के मुख से कहलाया है- शिवद्रोही मम दास कहावा, सो नर मोहि सपनेहुं नहि भावा। धार्मिक समन्वय के अतिरिक्त ज्ञान और भक्ति का दार्शनिक समन्वय भी तुलसी के रामकाव्य में उपलब्ध हैं। तरह शैव और वैष्णव भक्तियों तथा ज्ञान और भक्ति के बीच समन्वय का बड़ा दायित्व रामकाव्य में बखूबी निभाया गया है।

Ãüü काव्यरूपों की विविधता

राम.साहित्य का काव्य.क्षेत्र अधिक विस्तृत है क्योंकि इसमें काव्य की सभी शैलियों और विधियों को अपनाया गया है। तुलसीदास जी का 'रामचरितमानस' महाकाव्य है। इसकी गणना संसार में श्रेष्ठ महाकाव्यों में की गई है। 'जानकीमगल' अत्यन्त सुन्दर और मनोरम

खण्डकाव्य है।'गीतावली' गीतिकाव्य है जिसमें सरसता और संगीत का अपना स्थान है। 'विनयपत्रिका' स्तुतिपरक काव्यों में गणमान्य है।

विद्वानों की –ष्टि में यह रचना तुलसी के सभी काव्यों में उत्कृष्ट है। कवितावली' में वीरगाथाकालीन चरण पद्धति का अनुसरण हुआ है, जिसमें कवित्त, चप्पय, सवैये आदि के माध्यम से रामकाव्य की सरसता को उपस्थित किया गया है। 'रामललानहछू' लोकगीत का अनुपम साहित्यिक उदाहरण है।

संवाद की दृष्टि से केशव की 'रामचन्द्रिका' अनुपम है। इन श्रव्यकाव्यों के अतिरिक्त रामकाव्य में –ष्यकाव्य भी उपलब्ध है, जिनमें हृदयराम का 'हनुमान्नाटक', प्राणचन्द्र चौहान का 'रामायण महानाटक' और विश्वनाथसिंह का 'आनन्द रघुनन्दन नाटक' उल्लेखनीय है।

रामकाव्य में पद्य के साथ.साथ गद्य का प्रयोग भी दृष्टिगोचर होता है। रामप्रसाद निरंजनी का भाषा 'योगवासिष्ठ' खड़ी बोली गद्य में है। विश्वनाथ सिंह के 'आनन्द रघुनन्दन नाटक' में पद्य के साथ ब्रजभाषा का भी प्रयोग उपलब्ध होता है।

काव्य शैलियाँ : रामकाव्य में काव्य की प्राय: सभी शैलियाँ दृष्टिगोचर होती हैं । तुलसीदास ने अपने युग की प्राय: सभी काव्य-शैलियों को अपनाया है । वीरगाथाकाल की छप्पय पद्धति, विद्यापति और सूर की गीतिपद्धति, गंग आदि भाट कवियों की कवित्त-सवैया पद्धति, जायसी की दोहा पद्धति, सभी का सफलतापूर्वक प्रयोग इनकी रचनाओं में मिलता है । रामायण महानाटक (प्राणचंद चौहान) और हनुमननाटक (हृदयराम) में संवाद पद्धति और केशव की रामचंद्रिका में रीति-पद्धति का अनुसरण है ।

1. **रस :** रामकाव्य में नव रसों का प्रयोग है । राम का जीवन इतना विस्तृत व विविध है कि उसमें प्राय: सभी रसों की अभिव्यक्ति सहज ही हो जाती है । तुलसी के मानस एवं केशव की रामचंद्रिका में सभी रस देखे जा सकते हैं । रामभक्ति के रसिक संप्रदाय के काव्य में श्रृंगार रस को प्रमुखता मिली है । मुख्य रस यद्यपि शांत रस ही रहा ।
2. **भाषा :** रामकाव्य में मुख्यत: अवधी भाषा प्रयुक्त हुई है । किंतु ब्रजभाषा भी इस काव्य का श्रृंगार बनी है । इन दोनों भाषाओं के प्रवाह में अन्य भाषाओं के भी शब्द आ गए हैं । बुंदेली, भोजपुरी, फारसी तथा अरबी शब्दों के प्रयोग यत्र-तत्र मिलते हैं । रामचरितमानस की अवधी प्रेमकाव्य की अवधी भाषा की अपेक्षा अधिक साहित्यिक है ।
3. **छंद :** रामकाव्य की रचना अधिकतर दोहा-चौपाई में हुई है । दोहा चौपाई प्रबंधात्मक काव्यों के लिए उत्कृष्ट छंद हैं । इसके अतिरिक्त कुण्डलिया, छप्पय, कवित्त , सोरठा , तोमर ,त्रिभंगी आदि छंदों का प्रयोग हुआ है ।

4. **अलंकार :** रामभक्त कवि विद्वान पंडित हैं । इन्होंने अलंकारों की उपेक्षा नहीं की । तुलसी के काव्य में अलंकारों का सहज और स्वाभाविक प्रयोग मिलता है । उत्प्रेक्षा, रूपक और उपमा का प्रयोग मानस में अधिक है ।

3ü राम भक्त कवि तुलसी दास का परिचय :

इतिहास

तुलसीदास का जन्म श्रावण मास के सातवें दिन में चमकदार अर्ध चन्द्रमा के समय पर हुआ था। उत्तर प्रदेश के यमुना नदी के किनारे राजापुर (चित्रकुट) को तुलसीदास का जन्म स्थान माना जाता है। इनके माता-पिता का नाम हुलसी और आत्माराम दुबे है। तुलसीदास के जन्म दिवस को लेकर जीवनी लेखकों के बीच कई विचार है। इनमें से कई का विचार था कि इनका जन्म विक्रम संवत के अनुसार वर्ष 1554 में हुआ था लेकिन कुछ का मानना है कि तुलसीदास का जन्म वर्ष 1532 हुआ था। उन्होंने 126 साल तक अपना जीवन बिताया।

तुलसीदास का साहित्यिक जीवन :

तुलसीदास ने तुलसी मानस मंदिर पर चित्रकूट में स्मारक बनवाया है। इसके बाद वे वाराणसी में संस्कृत में कविताएँ लिखने लगे। ऐसा माना जाता है कि स्वयं भगवान शिव ने तुलसीदास को अपनी कविताओं को संस्कृत के बजाय मातृभाषा में लिखने का आदेश दिया था। ऐसा कहा जाता है कि जब तुलसीदास ने अपनी आँखे खोली तो उन्होंने देखा कि शिव और पार्वती दोनों ने उन्हें अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि वे अयोध्या जाकर अपनी कविताओं को अवधि भाषा में लिखे।

रामचरितमानस, महाकाव्य की रचना :

तुलसीदास ने वर्ष 1631 में चैत्र मास के रामनवमी पर अयोध्या में रामचरितमानस को लिखना शुरु किया था। रामचरितमानस को तुलसीदास ने मार्गशीर्ष महीने के विवाह पंचमी (राम-सीता का विवाह) पर वर्ष 1633 में 2 साल, 7 महीने, और 26 दिन का समय लेकर पूरा किया।इसको पूरा करने के बाद तुलसीदास वाराणसी आये और काशी के विश्वनाथ मंदिर में भगवान शिव और माता पार्वती को महाकाव्य रामचरितमानस सुनाया।

तुलसीदास की मृत्यु :

तुलसीदास की मृत्यु सन् 1623 में सावन के महीने में (जुलाई या अगस्त) गंगा नदी के किनारे अस्सी घाट पर हुआ।

तुलसीदास के दूसरे महत्वपूर्ण कार्य

रामचरितमानस के अलावा तुलसीदास के पाँच प्रमुख कार्य है:

दोहावली: ब्रज और अवधि भाषा में लगभग 573 विविध प्रकार के दोहों और सोरठा का संग्रह है ये। इनमें से 85 दोहों का उल्लेख रामचरितमानस में भी है।

कवितावली: इसमें ब्रज भाषा में कविताओं का समूह है। महाकाव्य रामचरितमानस की तरह इसमें 7 किताबें और कई उपकथा है।

गीतावली: इसमें ब्रज भाषा के 328 गीतों का संग्रह है जो सात किताबों में विभाजित है और सभी हिन्दूस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रकार है।

कृष्णा गीतावली या कृष्णावली: इसमें भगवान कृष्ण के लिये 61 गीतों का संग्रह जिसमें से 32 कृष्ण की रासलीला और बचपन पर आधारित है।

विनय पत्रिका: इसमें 279 ब्रज के श्लोकों का संग्रह है जिसमें से 43 देवी-देवताओं के लिये है।

तुलसीदास के अप्रधान कार्य

बरवै रामायण: इसमें 69 पद है और ये सात कंदों में विभाजित है।

पार्वती मंगल: इसमें अवधि भाषा में 164 पद है जो भगवान शिव और माता पार्वती के विवाह का वर्णन करते है।

जानकी मंगल: इसमें अवधि भाषा में 216 पद है जो भगवान राम और माता सीता के विवाह का वर्णन करते है।

रामालला नहछू: अवधि में बालक राम के नहछू संस्कार (विवाह से पहले पैरों का नाखून काटना) को बताता है।

रामाज्ञा प्रश्न: 7 कंदों और 343 दोहों में श्रीराम की इच्छा शक्ति का वर्णन किया गया है।

वैराग्य संदीपनी: वैराग्य और बोध की स्थिति की व्याख्या करने के लिये ब्रज भाषा में इसमें 60 दोहे है।

जनसाधारण द्वारा सम्मानित कार्य:

हनुमान चालीसा: इसमें 40 पद है जो अवधि भाषा में हनुमान जी को समर्पित है साथ ही इसमें 40 चौपाईयाँ और 2 दोहे भी है।

संकटमोचन हनुमानाष्टक: इसमें अवधि में हनुमान जी के लिये 8 पद है।

हनुमानबाहुक: इसमें 44 पद है जो हनुमान जी के भुजाओं का वर्णन कर रहा है।

तुलसीसतसाईं: इसमेंब्रजऔरअवधिमें747 दोहोंकासंग्रहहैजो7 सर्गोंमेंविभाजितहै।

निष्कर्ष : रामभक्ति शाखा अपने साहित्य से भारतीय समाज को एकता में बांधने में सफल रही है। समाज के विभिन्न वर्गों को एकत्रित करने में यह शाखा सफल रही है। भगवान की भक्ति करने का सरल उपाय समाज के लोगों को देने का प्रयास किया है। इस प्रकार रामभक्ति भावना समाज के सभी लोगों को परमात्मा के प्रति आस्था जगाने में मदद की।

संदर्भ सूची

1 काव्य निधि – डिग्री द्वितीय वर्ष
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल
Õüइंटरनेट पर की जानकारी
4. राम भक्ति शाखा – विशेषताएँ

S

ఘనంగా భక్త కవి గోస్వామి తులసీదాస్ జయంతి

తులసీదాస్ చిత్రపటం వద్ద నివాళులు అర్పిస్తున్న అధ్యాపకులు

బాదేపల్లి, ఆగస్టు 16 : జడ్చర్ల ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాలలో హిందీ విభాగం ఆధ్వర్యంలో భక్త కవి గోస్వామి తులసీదాస్ జయంతిని సోమవారం ఘనంగా నిర్వహించారు. గోస్వామి తులసీదాస్ చిత్రపటానికి పూలమాల వేసి, నివాళులు అర్పించారు. కార్యక్రమంలో కళాశాల అధ్యాపకులు రవీందర్‌రావు, హిందీ అధ్యాపకులు డాక్టర్ నరసింహారావు, కళ్యాణి, శ్రీనివాసులు, ఉదయ్‌కుమార్, వీరయ్య, నరసింహులు పాల్గొన్నారు.